AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing IF: 1.024
Vol (2), Issue (1), Feb-May 2025 ISSN: 3048-9751

वर्तमान शिक्षा को पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता

डॉ0 आभा सिंह[1]

Review: April. 05, 2025 **Acceptance: April, 02, 2025** **Publication: April, 05, 2025**

सारांश

शिक्षा का उद्देश्य मात्र साक्षर करना नहीं बल्कि बालक में अन्तर्निहित विशिष्ट गुणों को पहचान करते हुए व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है एवं बालक में विभिन्न गुणों जैसे नैतिकता, आत्मविश्वास, स्वाभिमान, सद्व्यवहार, विनम्रता, मौलिक चिन्तन, सृजनात्मक क्षमता, नेतृत्व क्षमता, त्याग, सहनशीलता आदि का विकास करना है। प्राचीन कल से ही हमारे ऋषि- मुनि इस तथ्य से अवगत थे कि शिक्षा के माध्यम से ही मानव का सर्वोतोन्मुखी विकास सम्भव है अतः उन्होंने शिक्षा की जिस व्यवस्थित तथा प्रशंसनीय शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन किया उस पर हमें आज भी गर्व है। हमारे वैदिक ज्ञान को विश्व ने सदैव स्वीकारा है किन्तु शिक्षा की वर्तमान स्थिति को देखते हुए सम्पूर्ण शैक्षिक व्यवस्था का पुनरावलोकन कर इसे वर्तमान की आवश्यकता के अनुरूप बनाने हेतु हमें शिक्षा के उद्देश्यों को पुनः परिभाषित किये जाने की आवश्यकता है।

मुख्य बिन्दु: शिक्षा के उद्देश्य।

प्रस्तावना: जे. कृष्णमूर्ति ने शिक्षा के सन्दर्भ में कहा था कि आप स्वयं से यह नहीं पूछते है कि आप क्यों पढ़ लिख रहे हैं? क्या आप जानते हैं कि आपको शिक्षा क्यों दी जा रही है और इस शिक्षा का क्या अर्थ है? जे.कृष्णमूर्ति के अनुसार ,हमारी समझ में शिक्षा का अर्थ है पाठशाला जाना,वहां जाकर पढ़ना, लिखना, परीक्षाएं पास करना और कुछ खेल इत्यादि में पारंगत होना ही मात्र है| विद्यालयी शिक्षा पूरा कर के उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु महाविद्यालय जाने लगते हैं वहां से उत्तीर्ण होते ही नौकरी की तलाश प्रारम्भ हो जाती है| क्या सही मायने में यही शिक्षा का सही अर्थ है? क्या शिक्षा का अर्थ यह नहीं है कि वह विद्यार्थी को जीवन में आने वाली समस्याओं का सामना करने हेतु समर्थ बनाएं। सच्ची शिक्षा वही है जो विद्यार्थियों को जीवन का सामना करने में मदद करें, ताकि वह जीवन को समझ सके, कठिनाईयों से हार न मान ले, समस्याओं के बोझ से दब न जाये। जैसा कि हममें से अधिकांश लोगों के साथ होता है। कई बार महसूस होता है की लोग, विचार, देश, जलवायू, इत्यादि हमको लगातार उस दिशा में ढ़केल रहे हैं, जिसमें कि समाज हमकों देखना चाहता है। शिक्षा का कार्य यह है कि वह विद्यार्थियों को इस दबाव को समझने के योग्य बनाए, इसे समझे और इससे बाहर निकलें जिससे कि एक व्यक्ति होने के नाते, एक मनुष्य होने के नाते, आगे बढ़कर कुछ नया करने में सक्षम हो सके और केवल परम्परागत ढंग से ही विचार करते न रह जाए। यही वास्तविक शिक्षा है।

यदि हम जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा के सन्दर्भ में दिये विचारों को आज के परिपेक्ष्य में विश्लेषित करें तो पाते हैं कि जहाँ शिक्षा का उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व व बुद्धि का विकास कर उसे आर्थिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक कार्यों को सम्पन्न करने के योग्य बनाना है उसका समाजीकरण करना हे वहीँ उसमें चिन्तन, प्रेम सहिष्णुता,

[1] डॉ.आभा सिंह, सहायक आचार्य (शिक्षा संकाय), जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

त्याग सहानुभूति जैसे गुणों का विकास कर उसे उत्तम मनुष्य बनाना है। किन्तु आज की शिक्षा वह है जो इंजीनियर बनाकर

अमेरिका पहुंचा दे रही है। किसी मल्टीनेशनल कम्पनी में कोल्हू के बैल की भांति जुतने योग्य बना दे रही है लेकिन लाखों के पैकेज वाले को आत्महत्या करने से रोकने में समक्ष नहीं है। आज एक बालक अपनी परीक्षा को स्थगित करवाने हेतु 3 वर्ष के मासूम बच्चे का क़त्ल तक कर देता है|वहीं विद्यार्थी जीवन की कठिनाइयों से घबरा कर पलायन कर जा रहा है। कोटा में नीट,जे.इ. की परीक्षा से पहले घबरा कर तो कुछ परीक्षा परिणाम से निराश हो कर आत्म हत्या कर ले रहे है| शिक्षा उन्हे जीवन संघर्ष करने योग्य नहीं बना पा रही है। वह व्यक्ति में नैतिकता, मूल्यों, उचित-अनुचित के मध्य अन्तर नहीं करना सीखा पा रही है। यहीं कारण है कि बड़े-बड़े इन्स्टीट्यूट से पढ़े इंजिनियर आतंकवादियों के लिए काम कर रहे हैं। वह अपनी शिक्षा का इस्तेमाल आतंकवाद को फैलाने में कर रहे हैं। चन्द रूपयों के खातिर लाखों लोगों की जान लेने से भी उन्हें गुरेज नहीं है। आज शिक्षा बालक को प्रबुद्ध इंसान के स्थान पर मशीनी इंसान, हिन्दू, मुसलमान, कम्यूनिष्ट या ऐसा ही कुछ और बना रही है।

आज यह अत्यन्त महत्व रखता है कि आप किस प्रकार शिक्षित किये जा रहे हैं आप किस ढंग से चिन्तन व्यक्त करते हैं। आज इस बात की आवश्यकता महसूस की जा रही है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा प्रणाली में सुधार हेतु कुछ प्रावधान किये गये हैं।

1. समाज की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा:

वर्तमान समय की मांग एवं अपेक्षाओं के अनुसार उद्देश्यों का निर्धारण किया जाना आवश्यक है। भारतीय समाज में फैल रही विसंगतियों को यदि कम करना है तो हमें शिक्षा के उद्देश्यों का पुनःनिर्धारण किये जाने की महत्ती आवश्यकता है। बालक में जीवन मूल्यों के आधार पर गुणों का विकास करना, स्वस्थ जीवन शैली का निर्माण करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द ने चरित्र निर्माण पर विशेष रूप से बल दिया। विवेकानंद जी के अनुसार शिक्षा क्या है? पोथी पढ़ लेना ही शिक्षा मात्र नहीं है? क्या विविध प्रकार के ज्ञान का नाम ही शिक्षा है? नहीं शिक्षा यह नहीं है। शिक्षा को हम उस प्रशिक्षण का नाम दे सकते हें जिसके द्वारा संकल्प शक्ति की धारा और उसकी अभिव्यक्ति पर नियन्त्रण किया जाता है जिससे संकल्प शक्ति सिद्ध होती है। वस्तुतः शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों में ऐसे संस्कार विकसित करने होंगे जिससे उनमे नैतिकता फलित हो सके। यदि आज उनमे संस्कार के बीज नहीं बोये तो कल हमें फल की आशा नहीं करनी चाहिए| जीवन के प्रारम्भ में ही यदि बालक में संस्कार के बीज निरूपित नहीं किये गये तो हमें फल की आशा नहीं करनी चाहिए की शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् वह बालक समाजहित के काम आयेगा।

महात्मा गांधी के अनुसार-"सारे ज्ञान का अंतिम लक्ष्य आवश्यक रूप से चरित्र निर्माण ही है।" गाँधी जी के अनुसार वह शिक्षा ही क्या जिसमें चरित्र निर्माण न हो और वह चरित्र ही क्या है जिसमें आरम्भिक वैयक्तिक पवित्रता न हो। व्यक्ति का चरित्र उसकी व्यक्तिगत शुचिता का परिणाम होता है। वस्तुतः शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास ही नहीं है अपितु छात्र में आदर्श आचरण हेतु छात्र के व्यवहार में भी परिवर्तन करना है। शिक्षा यदि व्यक्ति को सभ्य, शिष्ट एवं सुसंस्कृत नहीं बनाती तथा छात्र के आचार-विचार में कोई परिवर्तन नहीं लाती तो वह व्यर्थ सिद्ध होगी।ऐसी शिक्षा प्राप्त बालक ना ही स्वयं के लिए ना ही समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे|

वर्तमान परिस्थितियों में जहां जीवन मूल्यों का हाल देखने को मिल रहा है, वहां नैतिक शिक्षा प्रदान करना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। जहां आज के विद्यार्थी परीक्षाओं में नकल करना, पेपर आऊट करवाना, अपने स्थान पर किसी अन्य अभ्यर्थी से परीक्षा दिलवाना, मारपीट, दंगों का हिस्सा बनना, रैंगिग, सार्वजनिक सम्पति को क्षति पहुंचाना, नशाखोरी जैसी विसंगतियों के दलदल में धसते जा रहे हैं उसका प्रमुख कारण उनमें नैतिकता का अभाव है। हमारा पाठ्यक्रम उन्हें एक आदर्श व्यक्तित्व बनाने में विफल है।

हमारे पाठ्यक्रम का लक्ष्य विद्यार्थियों में ईमानदारी, कठिन परिश्रम, लालच में न पड़ना, विपत्ति में धैर्य, सदभाव, दयाभाव, प्रेम, परस्पर सहयोग, सहानुभूति, सेवा भाव, बड़ों के प्रति आदर भाव, संविधान एवं लोकतन्त्र में आस्था, अनुशासन आत्मनियन्त्रण तथा आत्म-निरीक्षण, सर्वधर्म समभाव के गुणों का विकास करना होना चाहिए।

शिक्षित व्यक्ति गीता के निष्काम कर्म को भूलते जा रहे हैं। जैसे-जैसे समाज में विद्यालयों की संख्या बढ़ती जा रही है उतनी ही तेजी से समाज में नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। आज हमें ऐसे संवेदनशील नागरिकों के निर्माण की आवश्यकता है जो देश के लिए समर्पित भाव से काम करें। श्रेष्ठ परम्पराओं, मान्यताओं एवं आदर्शों को पुनः स्थापित करने हेतु विद्यालय के माहौल को संस्कारयुक्त बनाने की आवश्यकता है। देश में एक ऐसी पीढ़ी को तैयार करने की आवश्यकता है जो भ्रष्टाचारविहीन भारतीय संस्कृति एवं आदर्शों की पोषक हो और पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण न करे। आज छात्रों में ऐसे संस्कार डालने की आवश्यकता है जो उन्हें प्रमाद और आलस्य से दूर रखें, वे सबको स्नेह करें, बड़ो का सम्मान करे, अपने समय का सदुपयोग करें। नशीली वस्तुओं से दूर रहें, पर्यावरण के प्रति सजग बने, समय के पाबन्द हो, गृहकार्य स्वयं नियमित रूप से पूरा करें, परीक्षाओं में अनैतिक साधनों का प्रयोग न करें, रटने के स्थान पर तार्किक क्षमताओं का विकास करे।

वस्तुतः कोई भी देश केवल आर्थिक रूप से सम्पन्न होने पर ही महान् नहीं बन सकता, जब तक कि उसके नागरिकों का व्यक्तित्व नैतिक दृष्टि से उच्च न हो। छात्रों को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे कि वे विषम परिस्थितियों में भी व्यवहार को नियन्त्रित रख सके। उनकी शक्तियों का रचनात्मक रूप से उपयोग हो सके और वे राष्ट्रीय सम्पत्ति को तनिक भी क्षति न पहुंचाएं और वे किसी भी तोड़-फोड़ के काम में न लगे।

शिक्षा का उद्देश्य:

शिक्षा का उद्देश्य आध्यात्मिक, वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण करना होना चाहिए। कोरा आध्यात्मिक व्यक्ति संसार में काम नहीं चला सकता है। केवल जीवन मूल्यों के उपदेश से संसार का काम नहीं चल सकता अतः व्यक्ति की चेतना में बदलाव करने वाले सभी पक्षों को जोड़ा जाए।

व्यासायिक क्षमता का निर्माण: वर्तमान युग में बैरोजगारी की विकट समस्या देश के सामने है। व्यवसायोन्मुख शिक्षा आज की परिस्थितियों में सबसे बड़ी आवश्यकता है। शिक्षा का उद्देश्य छात्र को जीविकोपार्जन के योग्य बनाना है। सभी किशोर व्यवसायोन्मुख शिक्षा को आज की विशेष आवश्यकता मानते है और समय-समय पर विभिन्न शिक्षा आयोगों एवं शिक्षा नीति में व्यवसायिक शिक्षा पर जोर दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी विद्यालय स्तर से व्यवसायिक शिक्षा दी जाए इस पर बल दिया है। किन्तु समस्त उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विभिन्न व्यवसायों में प्रशिक्षित अध्यापकों, प्रयोगशालाओं, कार्यशालाओं एवं भवन की अपर्याप्तता, तकनीकी साधनों की उपलब्धता न होने पाने के कारण व्यवसायिक शिक्षा सुचारू रूप से सभी विद्यालयों में उपलब्ध नहीं

करवाई जा पा रही है। सरकार निरन्तर इस दिशा में प्रयासरत है तथा यह उम्मीद की जा रही है कि 2030 तक हम व्यवसायोन्मुख शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे। सभी विद्यालयों में व्यवसायिक शिक्षा के साधनों की उपलब्धता सुनिश्चित हो पाएगी।

उपसंहार:

शिक्षा का उद्देश्य छात्र का सर्वांगीण विकास करना होना चाहिए न कि किसी न किसी प्रकार परीक्षा उत्तीर्ण करके डिग्री प्राप्त कर लेना। बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्यक्रम को देश की विशालता, विविधता, वर्तमान स्थानीय आवश्यकताओं सामाजिक भावना के विकास और व्यावसायिक कुशलता के विकास को दृष्टि में रखकर बहुमुखी बनाया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

- कुमार, डॉ. नरेश (1999), शिक्षा की आवश्यकताएं, दिल्ली, विक्रम प्रकाशन
- सोडाणी, डॉ. कैलाश (2021), राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 क्रियान्वयन, उदयपुर, अपेक्स पब्लिसिंग हाउस।
- जे. कृष्णमूर्ति (2007) शिक्षा क्या है, दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स
- यादव, डॉ. वीरेन्द्र सिंह (2014), भारतीय शिक्षा, मुद्दे, विकल्प और नीतियां, दिल्ली, ओमेगा प्रकाशन